

4, 20. KATHÁS. 42, 52. MĀRĠ. P. 23, 90. पद्भिः BHĀG. P. 3, 16, 22. पद्भि-
रेव गमिष्यामः zu Fuss MBH. 3, 10855. मुखत्राहुरूपज्ञानाम् M. 1, 87, 10,
45. श्रीविष्णुपदी (als Beiw. von तुलसी) BHĀG. P. 2, 3, 23 übersetzt BUR-
NOUF durch qui s'attache aux pieds du divin Viṣṇu. Vgl. पङ्कम्, पङ्क,
पत्काषिन्, पत्स, पति, षपद्, षष्ट, षष्टा, उतान, गूढ, घृतपदी, च-
तुष्पाद्, त्रि, द्वि, नव, 1. निष्पद्, पञ्च, पारावतपदी, युग, विश्वत-
स्पद्, शिति, मरुत्, सपदि u. s. w. Im instr. pl. erscheint RV. 4, 2, 14,
38, 3. 5, 64, 7. 10, 79, 2. 99, 12 und VS. 23, 13 die Schreibung पङ्भिः,
während AV. 3, 7, 2. 4, 11, 10. 14, 9. 19, 6, 2 die regelmässige Form steht.
Vgl. पद्भि, पद्भिण. Dagegen scheint पङ्भिः in der folgenden Stelle auf
पद् (etwa Blick oder Auge) zurückzugehen: अतस्त्वं दृश्यो अमृतान्प-
ङ्भिः पश्येरदुतां अयं एवैः RV. 4, 2, 12. Vgl. Nir. 5, 3, wo diese Form
von einem aus पा oder स्पद् oder स्पर्द् abgeleiteten Nomen hergelei-
tet wird. — 2) Schritt (s. पद): एकेन हि पदा कृत्स्नां पृथिवीं सो (विष्णुः)
ऽध्वतिष्ठत । द्वितीयेनाव्ययं व्योम यो तृतीयेन राशव ॥ R. 1, 31, 19 (32,
14 GORR.). — 3) Viertel (vgl. पाद): त्रिभिः पद्भिर्द्यार्मिराकृत्पादस्यैकभक्त्युनः
AV. 19, 6, 2. चतुर्धा भूतानि प्रविशति । अग्निं पदा मृत्युं पदाचार्यं पदात्म-
न्येवास्य चतुर्थः पादः परिशिष्यते CAT. Br. 11, 3, 2, 3.

3. पद्, पदति v. l. für पद् fest stehen (स्वैर्ये) VOP. in DhĀTUP. 3, 14.

पद् (von 1. पद्) n. (m. in der Bed. Strahl); euphonisches Verhalten eines
vorangehenden gen. P. 8, 3, 53. 54. am Ende eines adj. comp. f. आ.
Ableitungen von Zusammensetzungen, die auf पद् auslauten, P. 4, 2, 60,
VĀRĠ. 8. 1) Tritt, Schritt: त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः RV. 4, 22, 18. 154, 3.
धीरासः पदं क्वयौ नयति 146, 4. सज्ञोषा धीराः पदिरनु गमन् 63, 2 (1). य
स्तुते चिद्भास्पदेभ्यः 8, 2, 39. 9, 73, 4. 10, 46, 2. CAT. Br. 1, 1, 2, 13. 3, 3, 1, 34.
ĀCV. GRH. 1, 7. AV. 6, 76, 3. सप्तमे पदे M. 8, 227. HARIV. 736. 12202.
12203. 12209. 14232. fg. N. 14, 11, 12. कतिचिदेव पदानि गत्वा ÇĀK. 43.
अस्मिन्नलान्तिनतेनतत्रभूमिभागे मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति 90. VA-
RĀH. BRH. S. 52, 93. SĀH. D. 63, 15. दत्तैकम् — गृहं प्रति पदम् Spr. 343.
पदात्पदं चलितुम् (विचलितुम्) sich einen Schritt vom Platze fort bewe-
gen ABG. 4, 39. MBH. 3, 2614. 12167. 4, 754. PAÑĀT. 214, 18. पदमेकमपि
चलितुं न शक्नोति 16. शरीरासामर्थ्यान्न कुत्रचित्पदमपि चलितुं शक्नोति
69, 3. इति कतिचित्पदानि ददाति macht einige Schritte (zum Fortgehen)
MRĀKĪ. 63, 12. पदे पदे bei jedem Schritte, auf Schritt und Tritt, überall,
bei jeder Gelegenheit INDR. 3, 9. Spr. 34. 403. RĠ. 1, 5. KATHÁS. 4, 69. 32, 164.
44, 74. RĀGĀ-TAR. 2, 135. मध्यमं वैज्ञवं पदम् Viṣṇu's mittlerer Schritt
so v. a. der Luftraum R. 6, 13, 24. पितुः (विष्णोः) पदं मध्यमुत्पत्तती VIKR.
19. आत्मनः (विष्णोः) शब्दगुणं गुणाज्ञः पदं विमानेन विगाहमानः RAGH. 13,
1; vgl. विष्णुपद. — 2) Fusstapfe (H. an. 2, 229. MED. d. 8), Spur überh.:
यस्य त्री पूर्णा मधुना पदानि RV. 1, 154, 4. 5. वेदा यो वीनां पदम् 25, 7.
103, 1. त्रीणि पदान्यग्निनावाविः सन्ति 8, 8, 23. TS. 6, 1, 8, 1. CAT. Br. 1, 4, 8,
1, 7. 3, 3, 1, 1. fgg. अश्वस्य 2, 1, 4, 24. 12, 4, 4, 4. यथा कृ वै पदेनानुविन्देत्
14, 4, 2, 18. AV. 2, 12, 8. 10, 4, 7. JĀGĪ. 2, 266. R. 2, 42, 14. 3, 68, 45. 47.
ÇĀK. 190. MEGH. 12. MBH. 3, 17307. शकुनानामिवाकाशे मत्स्यानामिव
चोदके । पदं यथा न दृश्येत तथा ज्ञानविदां गतिः ॥ 12, 6763. (सीतायाः)
श्येष पदमन्वेष्टुं चारुणाभ्यर्चति पथि (d. i. आकाशे) R. 5, 3, 1. यथा नयत्य-
सुकपातेर्मृगस्य मृगयुः पदम् । नयेत्तयानुमानेन धर्मस्य नृपतिः पदम् ॥ M. 8.
44. विष्णोस्त्रीणि पदानि scheint ein best. Gestirn zu bezeichnen, wird

aber als der Zwischenraum zwischen den Augenbrauen gedeutet; vgl.
u. ध्रुव 2, 4. विष्णोः पदम् N. einer best. Localität R. GORR. 2, 70, 18. नख-
पदं die Spur eines Fingernagels MEGH. 36. KAURAP. 35. कारुह्ण^० dass. MEGH.
94. दशन^० die Spur der Zähne, Bisswunde GĠ. 8, 6. ब्रह्मणपद् so v. a.
Narbe H. 463. वेणी^० Spr. 43. पदमनुविधेयं मकृताम् so v. a. man soll in
die Fusstapfen der Ausgezeichneten treten BHART. 2, 61. — 3) Zeichen,
Merkmal AK. 3, 4, 16, 96. Verz. d. Oxf. H. 184, b. MED. MBH. 3, 12474.
12477. 12479. प्रियाप्रियेषु साम्येन जमा हि ब्रह्मणः पदम् KATHÁS. 28, 37.
तेजस्पदं मणियं च कृतं शिरोभ्यः BHĀG. P. 1, 13, 14. — 4) ein best. Län-
maass, zwölf oder fünfzehn Fingerbreiten, oder 1/2, 1/3, 2/7 eines Pra-
krama KĀTJ. ÇĀ. 16, 8, 21. Schol. zu KĀTJ. ÇĀ. 687, 7. 688, 4. अरतिपद-
प्रक्रमाः KAUC. 83. KĀTJ. ÇĀ. 8, 3, 14. 17, 3, 14. — 5) Standort, Ort, Stelle;
Heimathsort; Stelle so v. a. Amt, Würde, Rang AK. 3, 4, 16, 96. H. 988.
H. an. MED. (= स्थान und प्रदेश). अस्मिन्पदे परमे तस्थिवांसम् RV. 2,
35, 14. प्रिया पदानि पश्चा नि पाहि 1, 67, 7 (3). प्रिया दिवस्पदा 9, 12, 8.
सद्युः 8, 58, 7. देवस्य 91, 15. 6, 1, 4. मरीचीनां पदमिच्छति वेधसः 10, 177,
1. देवानामिना निक्षिता पदानि 1, 164, 5. निक्षितं पदं वेः 7, 3, 7, 7. 10, 5, 1.
पदं न गोरपृगुल्लकं विविद्वान् 4, 5, 3. इक्षुः 2, 10, 1. 3, 23, 4. 29, 4. AV. 7, 27,
1. अतिक्रामती डरिता पदानि 12, 2, 28. अयोः 6, 76, 2. — अथो ऽधो गङ्गयं
पदमुपगता BHART. 2, 10. धामयित्वा पदात्पदम् HARIV. 16028. पदात्पदम्-
मुञ्चती den Fuss nicht von der Stelle entfernend VID. 277. पदात्पदं च-
लितुम् (विचलितुम्) sich einen Schritt vom Platze fortbewegen ABG. 4,
39. MBH. 3, 2614. 12167. 4, 754. PAÑĀT. 214, 18. न चचाल पदात् BHĀG.
P. 9, 4, 47. 6, 5, 43. पृथु देहि पदं मन्थम् 8, 24, 20. पदमुच्चैर्गाहते Spr.
स्वयं गुण^० मेखला^० KATHÁS. 5, 32. (स ते) नभसा निन्ये वैद्याधरं पदम् 26,
241. तीर्थपदः पदानि BHĀG. P. 3, 1, 17. ब्रह्मायेति परं पदम् M. 12, 125.
6, 75. KATHOP. 3, 7. BHAG. 15, 5. आन्वीनिकीषु परं पदमीकमानाः VARĀH.
BRH. S. 19, 1. यज्ञभागभुजां मध्ये पदमातस्थुषा तया KUMĀRAS. 6, 72. पदानि
क्रतुतुल्यानि भोगेननिवर्तिनाम् JĀGĪ. 1, 324. अन्वशासत् — पितृपैतामहं
पदम् MBH. 1, 4079. अर्ध्यास्व चिररात्राय पितृपैतामहं पदम् SĀV. 7, 7. भ-
गवत्या प्राश्निकपदमध्यासितव्यम् MĀLAV. 13, 14. प्राज्ञापत्य ÇĀK. zu BRH.
Ā. UP. S. 314. ऋद्धं हि राश्वं पदमैन्द्रमाहुः RAGH. 2, 50. सुर^० 15, 50. अ-
पदस्थान्पदे तिष्ठन् MBH. 1, 5793. पदस्थ R. 6, 12, 7. KATHÁS. 4, 119. या-
त्येवं गृहणीपदं युवतयः ÇĀK. 93. स्नाद्ये स्थिता गृहणीपदे 94. युवतयो
याति राशीपदम् VARĀH. BRH. S. 68, 10. मरुदेवी^० VID. 11. गण^० MEGH.
56. तत्पदे — सुग्रीवं संन्यवेशयत् RAGH. 12, 58. ततः स्वतनयमेव पारमे-
श्वरे पदे निवेशयामि PRAB. 16, 5. उत्तम^० PAÑĀT. 16, 20. स्नाद्य^० HIT. IV. 12.
अत्युच्च^० KATHÁS. 17, 135. नियोष्य स्वपदे सुतम् 22, 58. विद्याधरी^० 26,
243. 34, 89. तत्पदे चापरं कृत्वा 43, 123. मन्दं मन्दं रचयति पदम् (zugleich
Versglted) BHART. 3, 18. RĀGĀ-TAR. 4, 117. ०च्युत BHĀG. P. 7, 1, 32. 8, 22, 3. प-
दाद्गुह्यः VOP. 3, 20. साचिव्य^० PAÑĀT. 103, 3. (तनयम्) राश्वपदे ऽभ्यषिञ्चत्
Inscr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 7, ÇĀ. 19. च्युतमसि (अङ्गुलीय) ल-
ब्धपदं पदङ्गुलीषु eig. und übertr. ÇĀK. 138. अतनिविष्टपदम् — शापम्
RAGH. 9, 82. (वचः) तदलब्धपदं कृदि शोकाथने 8, 90. विनाप्यथेधोरिः स्पृ-
शति ब्रह्ममानोन्नतिपदम् HIT. 1, 167. अरिसुन्दरीणां शोकार्णचोदयनिदान-
पदं प्रपदे Inscr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 303, ÇĀ. 15. पदमातन्
sich ausbreiten, Platz greifen: प्रियपुरतो युवतीनां तावत्पदमातनोत् कृ-
दि मानः BHART. 1, 32. पदे करु (पदे कृत्वा und पदेकृत्य) wohl anstellen